अन्यथा

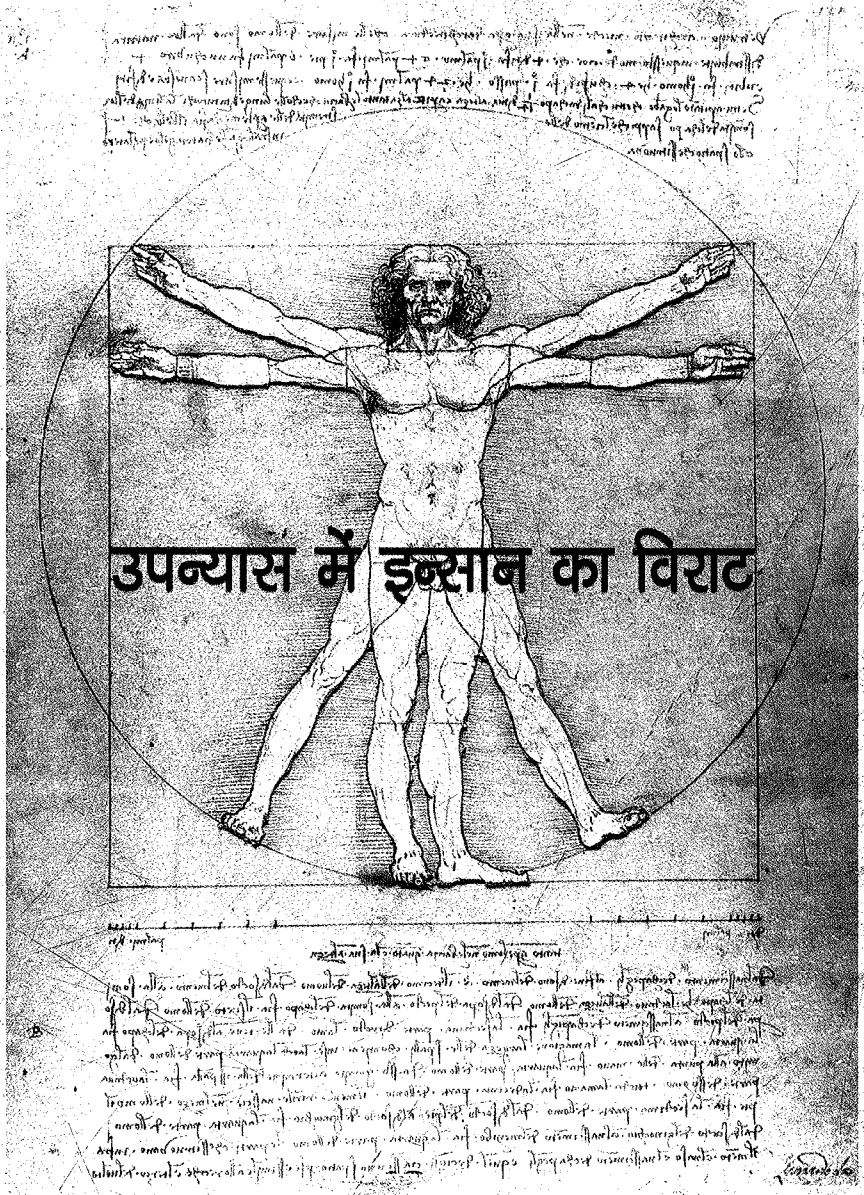

उपन्यास में इन्सान का विराट

अन्यथा
साहित्य-संवाद पत्रिका

इस अंक में
विशेष
उपन्यास में इन्सान का विराट

चन्द्रधर शर्मा गुलेरी
कृष्णा सोबती
निर्मला जैन
मंजूर एहतेशाम
विनोद शाही
सारा राय
नमिता सिंह
शरद सिंह
सुरेश आचार्य
सुधा अरोड़ा
तेजिन्दर
मृदुला गर्ग
ममता कालिया
श्रीभगवान सिंह
मैत्रेयी पुष्पा
दया दीक्षित
संजीव
गौतम सान्याल
विभूति नारायण राय
कृष्ण कुमार सिंह
अनामिका
रामेश्वर द्विवेदी

अन्य भारतीय भाषाओं से :

गुरदयाल सिंह
जोगिन्द्र सिंह राही
टी.आर. विनोद
देवेश्वर
मित्तरसेन मीत
दर्शन सिंह गिल
जंग बहादुर गोयल
शिवाजी सांवत
मानिक वंद्योपाध्याय
नवनीता देवसेन
एम.वीरप्पा मोइली
सलीम

विश्व साहित्य से :

डोरिस लेसिंग
सिमॉन द बुवार
मारियो वॉरगस योसा
मिखाईल शोलोखोव

चित्रा मुद्गल
स्वयं प्रकाश
रोहिणी अग्रवाल
खगेन्द्र ठाकुर
परमानंद श्रीवास्तव
प्रेम शशांक
सुमित्रा महरोल
रामरत्ती मलिक
रामशरण जोशी
पंकज बिष्ट
अब्दुल बिस्मिल्लाह
भगवानदास मोरवाल
ज्योतिष जोशी
विभूतिनारायण राय
जवरीमल्ल पारेख
उत्पल बैनर्जी
मैनेजर पांडेय
प्रत्यक्षा
माधव हाड़ा
आर. शांता सुंदरी
किरण अग्रवाल
सुषम बेदी

ISSN : 1550-4123

Price : Rs. 30.00

उपन्यास में इन्सान का विराट

सम्पादकीय :

कृष्ण किशोर - इन्सान के विराट का जयघोष - उपन्यास / 6

धरोहर :

चन्द्रधर शर्मा गुलेरी - हिन्दी भाषा के उपन्यास लेखकों के नाम / 22

रचना का आत्म और दृष्टि :

कृष्णा सोबती - समय-सरगम की चुनौतियां / 25

निर्मला जैन - समय-सरगम : वृद्धावस्था का उत्सव पक्ष-प्रतिपक्ष *(**कृष्णा सोबती** के उपन्यास पर)* / 27

गुरदयाल सिंह - पंजाबी के शीर्ष उपन्यासकार, ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता **गुरदयाल सिंह** से **विनोद शाही** की अंतरंग बातचीत / 31

साहित्य का सत्य *(रचना का आत्म)* / 39

टिड्डीदल *(उपन्यास अंश)* / 41

मंजूर एहतेशाम - दो शब्द, लेखन से रिश्तेदारी के बारे में / 44

अमर शहीद 'परछाईं' *(उपन्यास अंश)* / 46

सारा राय - याद्दाश्त की रीढ़ पर सरगम - 'चीलवाली कोठी' का लेखन / 58

सपना *(उपन्यास अंश)* / 60

नमिता सिंह - रशीदुन्नीसां मेमोरियल स्कूल *(उपन्यास अंश)* / 71

शरद सिंह - मेरे उपन्यास - मेरे जोखिम / 80

एन एच 26 *(उपन्यास अंश)* / 83

सुरेश आचार्य - देह-दुनिया के समीकरण को उजागर करता 'पचकौड़ी' *(**शरद सिंह** के उपन्यास पर)* / 90

सुधा अरोड़ा - उपन्यास की खाद खुराक - जिस लाहौर नहीं वेख्या ..... यानी मैं....! / 92

लाहौर का वह हमारा जमाना.... *(उपन्यास अंश)* / 94

तेजिन्दर - 'सीढ़ियों पर चीता' का लेखन / 101

सीढ़ियों पर चीता *(उपन्यास अंश)* / 102

मृदुला गर्ग - मुझे क्या बुरा था मरना गर एक बार होता / 107

मिलजुल मन *(सद्यः प्रकाशित उपन्यास अंश)* / 110

ममता कालिया - उपन्यास लेखन की चुनौतियाँ और मेरी कोशिशें / 116

श्रीभगवान सिंह - दरकते रिश्तों की दास्तान *(**ममता कालिया** के उपन्यास पर)* / 119

मैत्रेयी पुष्पा - मैंने अपनी कलम को हमजोली के रूप में ही देखा.... / 122

दया दीक्षित - प्रयोगों के सत्य की आत्मकथा 'गुड़िया भीतर गुड़िया' *(**मैत्रेयी पुष्पा** की आत्मकथा पर)* / 125

संजीव - मलबे के ढेर पर बैठा दुविधाग्रस्त कबाड़ी..... / 131

गौतम सान्याल - 'आकाशचंपा' की पाठनुभूतियाँ *(**संजीव** के उपन्यास पर)* / 137

विभूति नारायण राय - साहित्य आपको मनुष्य बने रहने में मदद करता है .... / 147

कृष्ण कुमार सिंह - त्रासद यथार्थ के चौखटे में 'भूत की प्रेमकथा' *(**विभूति नारायण राय** के उपन्यास पर)* / 149

अनामिका - ये मेरे दो उपन्यास / 154

रामेश्वर द्विवेदी - वंचित तबकों का रचनात्मक उदय : बनाम 'दस द्वारे का पींजरा' *(**अनामिका** के उपन्यास पर)* / 158

डायरी के झरोखे से :

चित्रा मुद्गल - नकतौरा *(कुछ निजी पन्ने)* / 163

सुषम बेदी - एक यात्रा उपन्यास की.....*('मैंने नाता तोड़ा' का बीज सूत्र)* / 170

आलेख :

स्वयं प्रकाश - उसी को देखकर जीते हैं जिस काफ़िर पे दम निकले / 177

रोहिणी अग्रवाल - लोकतंत्र यानी हिंदी साहित्य के बहाने एक संवाद अपने से / 180

खगेन्द्र ठाकुर - तीसरी दुनिया के यथार्थ का सर्जनात्मक रूप : लाल पसीना / 192

परमानंद श्रीवास्तव - उपन्यास का राजनीतिक परिदृश्य और समाज विमर्श / 198

प्रेम शशांक - प्रेमचंद और रेणु की परम्परा और उपन्यास का वर्तमान परिदृश्य / 202

सुमित्रा महरोल - अब सचमुच 'थमेगा नहीं विद्रोह' *(**उमराव सिंह जाटव** के उपन्यास पर)* / 209

जंग बहादुर गोयल - उपन्यास की विकास-यात्रा / 211

रामरत्ती मलिक - बन्द धड़कनों की धड़कती दास्तान : कितने पाकिस्तान / 215

परिचर्चा - हिन्दी उपन्यास पर - हिंदी उपन्यास साहित्य में स्वातंत्र्योत्तर भारत की उपस्थिति / 218

रामशरण जोशी, मृदुला गर्ग, पंकज बिष्ट, अब्दुल बिस्मिल्लाह, भगवानदास मोरवाल, ज्योतिष जोशी, विभूतिनारायण राय, जवरीमल्ल पारेख *(संयोजक)*

परिचर्चा - पंजाबी उपन्यास पर - कालजयी रचनाशीलता और विकासमूलक यथार्थ / 235

जोगिन्द्र सिंह राही, टी.आर. विनोद, देवेश्वर, मित्तरसेन मीत, दर्शन सिंह गिल, विनोद शाही *(संयोजक)*

पंजाबी उपन्यास पर :

मैनेजर पांडेय - व्याख्यान - मीत के उपन्यासों में लोकतंत्र *(**मित्तरसेन मीत** के उपन्यासों पर)* / 255

विनोद शाही - आधुनिक उपन्यास की 'आर्केटाइपल' कृति : मढ़ी का दीवा *(**गुरदयाल सिंह** के उपन्यास पर)* / 259

अन्य भारतीय भाषाओं से :

आलेख :

प्रत्यक्षा - "अरे पागल तू अपनी ख़बर जाने बिना ... कहाँ जायेगा ...!" ***(बंगला उपन्यास पर)*** / 268

माधव हाड़ा - 'गोरा' के दायरे में धर्म का निषेध ***(बंगला उपन्यास पर)*** / 270

उपन्यास अंश :

शिवाजी सांवत - मृत्युंजय - ***मराठी*** *(उपन्यास अंश)* ***रूपांतर : ओम शिवराज*** / 273

मानिक वंद्योपाध्याय - पुतुलनाच की कथा - ***बंगला*** *(उपन्यास अंश)* ***रूपांतर : उत्पल बैनर्जी*** / 284

नवनीता देवसेन - मैं, अनुपम - ***बंगला*** *(उपन्यास अंश)* ***रूपांतर : उत्पल बैनर्जी*** / 294

एम.वीरप्पा मोइली - ढोल - ***कन्नड़*** *(उपन्यास अंश)* ***रूपांतर : बी.आर. नारायण*** / 306

सलीम - नई इमारत के खंडहर - ***तेलुगु*** *(उपन्यास अंश)* ***रूपांतर : आर. शांता सुंदरी*** / 311

विश्व साहित्य से :

डोरिस लेसिंग - The Cleft ***(अंग्रेज़ी)*** - ***प्रस्तुति : किरण अग्रवाल*** / 321

सिमोन द बुवार -The Mandarins तथा सिमोन के प्रेम पत्र ***(फ्रेंच)*** - ***प्रस्तुति : डॉ भवजोत*** / 325

मारियो वॉरगस योसा - Feast of the Goat ***(लैटिन अमेरिकन** उपन्यास अंश)* - ***अंग्रेज़ी से रूपांतर : सुखजोत*** / 333

मिखाईल शोलोखोव - And Quiet Flows the Don ***(रूसी** उपन्यास अंश)* - ***अंग्रेज़ी से रूपांतर : डॉ. भवजोत*** / 340

उमराव सिंह जाटव के उपन्यास पर

अब सचमुच 'थमेगा नहीं विद्रोह'

सुमित्रा महरोल

सुमित्रा महरोल

थमेगा नहीं विद्रोह उपन्यास के लेखक उमराव सिंह जाटव जी ने इस उपन्यास में दरियापुर नामक स्थान के अनेकों पात्रों के माध्यम से दलितों-वंचितों-शोषितों की यातनाओं, अपमानों, वर्जनाओं, विडम्बनाओं के साथ-साथ उनके सपनों, आकांक्षाओं, उच्चतर मानवीय मूल्यों के प्रति उनकी आस्थाओं को तो अभिव्यक्त किया ही है, बदलते परिदृश्य के अनुरूप दलितों में उत्पन्न हुए जागरण, संगठन, विरोध व विद्रोह को भी वाणी दी है।

उपन्यास व्यापक फलक पर लिखा गया है। पात्र बहुआयामी व्यक्तित्व के साथ-साथ अपने परिवेश, संस्कृति, विशिष्ट बोली-बानी, आचार-विचार को समग्रता में जीते हुए एक विशिष्ट काल खंड का लेखा जोखा लिए हुए मूर्तिमंत है। चावली, भागो, तुलाराम, मुंडा देवीचरन, हुकम सिंह, चंदर, इंदर, सोनपाल, हमीद, खाला इत्यादि कुछ इसी प्रकार के पात्र हैं। इनके चरित्र की सूक्ष्म रेखाओं के माध्यम से वर्गीय चरित्र को तो उभारा ही गया है परिवेश व संस्कृति भी अपनी झीनी छटा लिए सर्वत्र विद्यमान है।

उपन्यास में कोई एक केन्द्रीय पात्र और उसके साथ-साथ चलती गौण कथाएँ नहीं है। कुछ पात्रों के विस्तृत जीवन वृत उपन्यास में आए हैं पर सभी पात्र एक दूसरे से असम्पृक्त हैं, एक मात्र साम्यता यह है कि सभी दलित हैं।

एक बात जो इस उपन्यास को महत्वपूर्ण बनाती है, वह है - पद्दलित शोषित जाटव एवं शक्ति सम्पन्न गूजर और इनमें विभिन्न मुद्दों पर होने वाला संघर्ष। यह संघर्ष इस बात की ओर संकेत करता है कि अपनी तमाम सीमाओं, दुर्बलताओं, अक्षमताओं - समाज में अपनी अत्यंत हेय व कमजोर स्थिति के उपरांत भी जाटव संगठित हो अपने अधिकारों के प्रति सचेत हो गए हैं और यह जानते हुए भी कि वह शक्ति में गूजरों से हीन हैं, अपने और अपने समुदाय के अधिकारों के लिए वह गूजरों से भिड़ जाते हैं व गूजरों को जता देते हैं कि वह अब जाटवों से मनमाना व्यवहार नहीं कर पाएँगे।

उपन्यास में जाटवों के कुएँ पर गूजर शक्ति के बल पर आधिपत्य स्थापित कर लेते हैं। पहले तो जाटव बिनती-चिरौरी करते हैं व बातचीत के दम पर समस्या निवारण की कोशिश करते हैं। सकारात्मक परिणाम न आने पर मार-पीट तक उतारू हो जाते हैं व अंत में विवश हो न्यायालय की शरण लेते हैं। न्यायपालिका जाटवों के पक्ष में निर्णय देती है।

इस प्रकरण में यह जाटवों की संगठित शक्ति ही थी जिसके समक्ष दबंग शक्तिशाली गूजरों को घुटने टेकने पड़े। जाटवों में ऐसी सामूहिक चेतना, ऐसा संगठन अभूतपूर्व है। अपने बुनियादी अधिकारों के लिए न्यायालय तक जाना व अपने अधिकारों के लिए संगठित हो ताड़ने की चेतना अशिक्षित पद दलित समुदाय के द्वारा किया जाना ही अपने आप में प्रशंसनीय है। यह इस बात की मुनादी है कि अवर्ण अब सवर्णों के शोषण को चुपचाप बर्दाश्त नहीं करेगा, वो विरोध करेगा, फिर चाहे परिणाम कुछ भी हो। यह चेतना यह साहस जागना ही किसी समुदाय के उत्थान की प्रथम सीढ़ी है।

चावली नामक स्त्री पात्र इस उपन्यास में इसलिए महत्वपूर्ण है कि बाल्मीकि समुदाय में स्त्रियों की अत्यंत शोचनीय स्थिति को तो इसके माध्यम से आकलित किया ही जा सकता है, इसके अतिरिक्त समाज की एक अत्यंत घृणित गर्हित, अमानवीय "मैला...ढोने की प्रथा" को भिन्न-भिन्न दृष्टिकोणों से भिन्न-भिन्न पात्रों के माध्यम से देखने का प्रयास किया गया है। मेहतराानियों द्वारा अंजाम दी जाने वाली प्रथा का वर्णन लेखक ने इस प्रकार किया है - "घर के एक कोने में ही पाखाना के लिए एक घट्टी बना लेते थे। जजमान का पूरा कुनबा जब जी भर हग लेता, तब मेहतरानी आकर उस गंदगी को टीन के कनस्तरों में भरकर शहर से बाहर फेंक आती थी। कनस्तर का चलन भी बस बहुत दिनों पुराना नहीं था, अंग्रेज़ों के आने पर आरंभ हुआ, उससे पहले तो बांस अथवा टहनियों के टोकरे में भर कर जब मेहतर चलता था तो गू उसमें से टपकता जाता था (पृ. 183)"

कितनी घृणास्पद, कितनी अमानवीय है यह प्रथा। चिन्तनीय यह है कि आज़ादी के इतने वर्षों बाद भी, यह हमारे समाज में आज भी विद्यमान है। सरकार एवं प्रबुद्ध समाज के द्वारा इसके उन्नमूलन के अनेक प्रयास किए गये हैं, पर इन सबके उपरांत भी यह प्रथा आज भी हमारे समाज में जड़ें जमाए हुए है।

यहाँ पर यह उल्लेखनीय है कि चावली की माँ जैसे पात्र अज्ञानता, अशिक्षा, कुसंस्कार, कूपमंडूकताओं के चलते इस प्रथा के इतने आदि हो चुके हैं कि - "उमर गुजर गई गू मूत कमाते, इसकी बास मेरे जीवन में इतनी समा गई है कि सुबह उठते ही सूँघने को न मिले तो बहुत बैचेनी होती है। एक दो घर कमा लेती हूँ, तब जाकर चैन आता है-" (पृ. 184)

स्थिति का एक पक्ष यह भी है। इस काम में रम चुके लोग इसके इतने अभ्यस्त हो चुके हैं कि आसानी से इसे छोड़ना नहीं चाहते। दूसरी ओर चावली जैसे पात्र हैं जो इस कार्य से पलायन कर चुके हैं व इस घृणित व गर्हित कार्य का स्वप्न में भी स्मरण नहीं करना चाहते।

धर्म, समाज व पितृसत्ता रूपी कटारों ने सबसे मर्मान्तक घाव दलित स्त्रियों को ही दिए हैं। उन्हें स्त्री व दलित होने के दोहरे संतापों को झेलना पड़ता है। चावली, भागमली, कमलेश सभी दलित स्त्रियाँ हैं। व्यवस्था रूपी कोड़े भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में पड़ी इन स्त्रियों को समान रूप से झेलने पड़ते हैं।

भागमली के माता पिता बेटी रूपी बोझ से मुक्त होने के चलते उसे जान-बूझ कर तपेदिक के रोगी के साथ ब्याह देते हैं। पति संसर्ग के कारण भागमली को भी तपेदिक हो जाता है वह पति से भी पहले यमलोक पहुँच जाती है। स्वयं सत्तर घाटों का पानी पी चुका मुंडा, पत्नी कमलेश का किसी अन्य पुरुष से अनुराग बर्दाश्त नहीं कर पाता व पत्नी की उसके प्रेमी सहित हत्या कर देता है।

मुंडा का भाई देवीचरन पहले तो मुंडा के स्थान पर स्वयं जेल जाता है व बाद में मुंडा की जगह खुद फाँसी पर चढ़ जाता है। भाई का भाई के प्रति अनन्य प्रेम भारतीय संस्कृति के अनुकूल ही है।

धर्म, झूठे दंभ, अहम्, दिखावे एवं परिस्थितियों के मकड़जाल में उलझे तुलाराम जाटव की कथा अत्यंत रोचक एवं पठनीय है। पाँच बीघे खेत का स्वामी तुलाराम मंदिर बनाने की बेतुकी सनक के चलते न केवल किसान से दिहाड़ी मजदूर बनने को विवश हो जाता है, अपितु परिस्थितियों के चलते रातों-रात गाँव छोड़ कर भागने को विवश हो जाता है। इस प्रसंग में अनेक मतभेदों, वैमनस्यों एवं मनमुटावों के होते हुए भी जाटवों की एकता स्तुत्य है। गूजर जब एकजुट हो तुलाराम को मारने के लिए आते हैं तो तुलाराम की मुर्खतापूर्ण हरकतों को विस्मृत कर जाटवों के चारों मुहल्ले आपसी मतभेद भूलकर उसकी रक्षा को दौड़ पड़ते हैं।

'थमेगा नहीं विद्रोह' में स्थानीय बोली-बानी, संस्कृति एवं ग्रामीण परिवेश का जीवंत व चित्रात्मक वर्णन न केवल आँचलिकता का सा आभास देता है, अपितु पाठक को आदि से अंत तक बाँधे रखने में भी सफल रहा है।

❖

डी-160, ग्राउंड फ्लोर, रामप्रस्थ कालोनी, गाज़ियाबाद